(पृष्ठ 23 का शेष ...)

(६) परमपारिणामिकभाववाले निजकारणपरमात्मा की दृष्टि करने से अविनाशी सुख प्रकट होता है। निमित्त, विकार एवं अधूरीपर्याय की रुचि छोड़कर अन्तर के सहजानन्दस्वभाव की रुचि करो ह्न ऐसा कहने का भाव है। जिसप्रकार अधिक वर्षा होने से नदियों में बाढ़ आ जाती है अथवा सागर में जल की तरंगें उठती हैं; उसीप्रकार यहाँ चैतन्यस्वभाव में समुद्र की तरह ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुख इत्यादि अनन्त गुण उछल रहे हैं; उसमें एकाग्रता करने से सुख की प्राप्ति होती है।

(७) दान, दया, काम, क्रोधादिभाव क्लेश हैं। शरीर में सुख है, पुण्य से धर्म है, निमित्त से लाभ है ह्न इत्यादि अनेक प्रकार से अज्ञानी के पर्यायबुद्धि विलसित हो रही है, ये सब क्लेश का सागर है। शुद्धचैतन्यस्वभाव का आश्रय लेने पर पर्यायबुद्धिरूपी क्लेश का अन्त आ जाता है।

शुद्ध आत्मा को अनेक विशेषणों से परिचित कराया और कहा कि शुद्ध आत्मा जयवन्त वर्त्तता है। जिनको भान हुआ है, जिनको अनुभव में वर्त्त रहा है, वे मुनिराज कहते हैं कि शुद्ध आत्मा जयवन्त वर्त्तता है। कथन का सार यह है कि निमित्त की, शुभराग की, एक समय की निर्मलपर्याय की बुद्धि छोड़ और त्रिकालीशुद्धस्वभाव की रुचि करके स्वभावबुद्धि कर।

अज्ञानी जीव पैसे में, मोटर में तथा अनेक प्रकार के वैभव में सुख मान रहे हैं; किन्तु वह तो प्रत्यक्ष राग है और उसमें आकुलता है। स्वभाव का लक्ष्य चूककर पर में सुख की मान्यता करने से पर्याय में आकुलता होती है, वह आत्मा की एक समय की विकारी दशा है। आकुलता तो अनाकुल स्वभाव का विकृतरूप है और आत्मा विकृतदशा रहित है। जीव पुण्य-पाप में लिप्त हो गया है, इसलिये शुद्धस्वभाव दिखाई नहीं देता। आत्मा तो पुण्य-पाप की पर्याय से रहित, शुद्ध, अनाकुलस्वभावी, सुखसागर ह्न ऐसे का ऐसा विराज रहा है।

चैतन्यसागर ज्ञान, दर्शन, सुख इत्यादि अनन्त गुणों से उछल रहा है, उसमें सुख की बाढ़ आ रही है; अतः संयोगों की तथा निमित्तों की रुचि छोड़। यह भगवान आत्मा संयोगों से रहित, पुण्य-पाप से रहित एक-समय की निर्मल पर्याय जितना भी नहीं है; यह तो अनादि-अनन्त शुद्ध एकरूप परमपारिणामिकस्वभाव भाववाला है, जो कि अन्तर में कारणपरमात्मारूप सदा विराज रहा है। हे जीव ! तू उसी की दृष्टिकर, उसी की श्रद्धा एवं आश्रय से सम्यग्दर्शन प्रकट होकर सच्चा सुख प्रकट होगा ह्न ऐसा कहने का अभिप्राय है। ऐसा शुद्ध आत्मा जयवन्त वर्तता है। ●

दशलक्षण पर्व के संदर्भ में

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास आमंत्रण-पत्र आना प्राप्त हो गये हैं। जो भी अपने जिनमंदिर में विद्वान की व्यवस्था चाहते हैं, वे अपना आमंत्रण-पत्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भी भेज दिये गये हैं, एतदर्थ विद्वानों से भी निवेदन है कि वे अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें।

– मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 323 अंक : 11

जगतगुरु कब निज...

जगतगुरु कब निज आतम ध्याऊँ।।टेक।।
नग्न दिगम्बर मुद्रा धरिके, कब निज आतम ध्याऊँ।
ऐसी लब्धि होय कब मोकूँ, जो निजवाँछित पाऊँ।।
जगतगुरु कब निज... ।।1।।
कब गृहत्याग होऊँ बनवासी, परम पुरुष लौ लाऊँ।
रहूँ अडोल जोड़ पद्मासन, कर्म कलंक खपाऊँ।।
जगतगुरु कब निज... ।।2।।
केवलज्ञान प्रकट करि अपनो, लोकालोक लखाऊँ।
जन्म-जरा-दुख देत जलांजलि, हो कब सिद्ध कहाऊँ।।
जगतगुरु कब निज... ।।3।।
सुख अनन्त बिलसूँ तिहि थानक, काल अनंत गमाऊँ।
'मानसिंह' महिमा निज प्रकटे, बहुरि न भव में आऊँ।।
जगतगुरु कब निज... ।।4।।

– कविवर पण्डित मानसिंहजी

छहढाला प्रवचन

गृहीत-मिथ्याज्ञान का स्वरूप और उसके त्याग का उपदेश

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक-पोषक अप्रशस्त।
कपिलादि रचित श्रुत कौ अभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

यह जगत् किसी का बनाया हुआ नहीं है। जगत् के जड़-चेतन सभी पदार्थ अकृत्रिम स्वयंसिद्ध हैं; प्रत्येक वस्तु में अपने-अपने गुण भी स्वयंसिद्ध हैं, संयोग से उन गुणों की उत्पत्ति नहीं हुई। 'सब मिलकर एक अद्वैत ब्रह्म हैं और दूसरा कुछ सत् है ही नहीं अथवा ईश्वर इस जगत् का कर्त्ता-हर्त्ता है' - ऐसा मानना गृहीतमिथ्यात्व है तथा ऐसा प्रतिपादन करनेवाले शास्त्र, कुशास्त्र हैं। अज्ञान के पोषक ऐसे शास्त्रों से वीतरागी ईश्वर का सच्चा स्वरूप नहीं पहचाना जाता।

सर्वज्ञ-अरिहंतदेव के कवलाहार, निर्ग्रन्थ साधु के वस्त्र, भगवान को रोगादि मल-मूत्र ह्न इसप्रकार जिसमें देव व गुरु के सम्बन्ध में अत्यन्त विपरीत प्ररूपणा हो - वे भी गृहीत मिथ्याज्ञान के ही पोषक कुशास्त्र हैं - ऐसा समझना और अपने हित के लिये उनका सेवन छोड़ना।

मात्र पर जीव की दया का शुभभाव अथवा आहारदान का शुभभाव राग है, इस राग से मोक्ष कहना विपरीत कथन है। वीतरागी जैन सिद्धान्त में राग को तो बन्ध का कारण कहा है; अत: भले ही शुभराग हो, वह भी बन्ध का ही कारण है; मोक्ष का नहीं। मोक्ष का कारण तो वीतराग सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही है।

रागरहित अबन्धस्वभावी भगवान आत्मा के ही आश्रय से भव का अभाव होता है; राग के आश्रय से कभी भी भव का अभाव नहीं होता। सच्चे मुनि को आहारदान देने के फल में भोगभूमि की प्राप्ति कही गई है; मोक्ष की नहीं। श्रेयांसकुमार आदि को

तो आहारदान देते समय अन्तर में आत्मा का सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान था, वही मोक्ष का कारण हुआ है, न कि आहारदान का शुभराग। अहा ! वीतरागी शास्त्रों ने तो वीतरागमार्ग ही प्रकाशित किया है; जहाँ उपचरित कथन हो, वहाँ भी वीतरागभावरूप मोक्षमार्ग से अविरुद्ध आशय समझकर उसका अर्थ समझना चाहिये। व्यवहार पराश्रित है; अतः वह त्याज्य है, निश्चय स्वाश्रित है; अतः वह आदरणीय है। वीतरागी शास्त्रों के कथन में कहीं भी परस्पर विरोध नहीं होता।

यदि कोई व्यक्ति शास्त्र पढ़कर किसी भी तरह के राग या पराश्रयभाव की पुष्टि का अभिप्राय रखे, तो उसने शास्त्र का सच्चा अर्थ नहीं समझा। वीतरागी शास्त्र तो पराश्रय को और राग को छुड़ानेवाले हैं; पोषनेवाले नहीं।

कोई अज्ञानी प्रगटरूप से कुशास्त्र को भला न मानता हो; परन्तु सच्चे शास्त्र के नाम पर भी यदि कुशास्त्रों जैसी ही मिथ्यामान्यता को पुष्टि करता हो तो उसके भी गृहीत-मिथ्याज्ञान विद्यमान है। यही बात 'सत्तास्वरूप' में कहते हैं - सर्वज्ञ अरिहन्तदेव और अन्य कुदेव के बीच में विद्यमान बड़े अन्तर को पहिचाने बिना, यदि कोई जीव अरिहन्तदेव को ही माने और अन्य कुदेवों को न माने तो भी उनके गृहीत मिथ्यात्व का त्याग नहीं है। व्यवहार से देव के सच्चे स्वरूप को पहचाने बिना गृहीतमिथ्यात्व नहीं छूटता। इसी प्रकार सच्चे शास्त्र एवं गुरु के संबंध में भी समझ लेना चाहिये।

परमसत्य वीतरागीमार्ग के प्रकाशक सर्वज्ञ परमात्मा वर्तमान में भी विदेहक्षेत्र में साक्षात् विराजमान हैं; एक-दो या दस-बीस नहीं, अपितु लाखों सर्वज्ञ अरिहन्त भगवन्त वहाँ विराजमान हैं; वहाँ बाह्य में गृहीतमिथ्यात्व की कोई प्रवृत्ति नहीं होती, जैन के अतिरिक्त अन्य मत के मंदिर नहीं होते; जीवों के अन्तरंग अभिप्राय में विपरीतता हो, यह दूसरी बात है; परन्तु बाह्य में प्रगटरूप से जैनमार्ग से विपरीत कोई मार्ग वहाँ नहीं चलता। यहाँ भरतक्षेत्र में तो वर्तमान में सर्वज्ञ का विरह, धर्म के विराधक जीवों की बहुलता और आराधक जीवों की अत्यन्त विरलता है, तदुपरांत धर्म के नाम पर अनेक विपरीततायें चल रही हैं। वीतराग-जैनधर्म के नाम पर लोगों में देव-गुरु-शास्त्र के बारे में बहुत विपरीतता चल गई है। अत: असत्य को भेदकर, यथार्थ वीतराग मार्ग को समझकर मुमुक्षु जीवों को बहुत लगन से उसका सेवन करना चाहिए और विपरीतता का सेवन सर्वथा छोड़ देना चाहिए। जो अपना हित चाहता

हो, वह ऐसा करे। अपने सच्चे श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र से ही अपने को लाभ है।

जिसको देव-गुरु-धर्म के स्वरूप में भूल हो अथवा बन्ध-मोक्ष के कारण में भूल हो, उसकी भूल तो मूलभूत है; सर्वज्ञदशा, मुनिदशा इत्यादि उत्कृष्टदशा प्रगट होने पर कितनी शुद्धता होती है, कितना आस्रव-बन्ध छूटता है और उसके निमित्त से बाह्य दशा कैसी होती है, उसको जो नहीं पहचानते और विपरीत मानते हैं, वे गृहीतमिथ्यात्वी हैं। केवलज्ञान होनेपर शरीर भी दिव्य हो जाता है और वहाँ ऐसी असाता का उदय नहीं रहता कि क्षुधा लगे या रोग हो जाये। मुनिदशा की पवित्र भूमिका में ऐसी तीव्र कषाय नहीं रहती कि दो बार खाना पड़े या वस्त्र पहनना पड़े। धर्म के जिज्ञासु को धर्म की प्रत्येक भूमिका का यथार्थस्वरूप शास्त्र-अनुसार समझना चाहिए; क्योंकि हित के कारणरूप मूलभूत तत्त्वों में जिसकी भूल होगी, वे अपना हित नहीं साध सकते।

अरिहन्तदशा में केवली का आहार मानने से या साधुदशा में वस्त्र मानने से नवतत्त्व में भूल होती है; क्योंकि उस पवित्र वीतरागदशा में आस्रव-बंध नहीं होते तथा उस दशा में होनेवाली संवर-निर्जरा को भी उसने नहीं जाना; मोक्ष होने के लिये कितने प्रमाण में संवर-निर्जरा होती है तथा कितने प्रमाण में आस्रव-बंध छूट जाता है, उसको न पहचानकर उससे कम में मोक्ष मान लिया; अतः उसमें भी भूल हुई, मोक्ष के सच्चे कारण को उसने नहीं पहचाना। जीव के साथ अजीव के संबंध की कितनी मर्यादा है और जीव की शुद्धपर्याय में कषाय का अभाव होने पर अजीव के साथ कितना सम्बन्ध छूट जाता है - वह भी उसने नहीं जाना; अतः जीव-अजीव के ज्ञान में भी भूल हुई; जैसे वीतरागी जीवों को अजीव के साथ ऐसा सम्बन्ध नहीं होता कि वस्त्र या भोजन हो - इसप्रकार जिसके मूल तत्त्व में विपरीत मान्यता है, उसके सभी तत्त्वों में भूल हो जाती है। इसलिये सर्वज्ञ-वीतरागदेव की परंपरा से रचित समयसारादि सत्य शास्त्रों के अनुसार यथार्थ तत्त्व का निर्णय करके अज्ञान को मिटाना चाहिए।

इसप्रकार गृहीत मिथ्यादर्शन और गृहीत मिथ्याज्ञान का स्वरूप कहकर उसके त्याग का उपदेश दिया। अब गृहीत मिथ्याचारित्र क्या है ? यह दिखाकर उसके भी त्याग का उपदेश करते हैं। ●

नियमसार प्रवचन

निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८।।

(हरिगीत)

जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।
पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है॥३८॥

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय है।

(गतांक से आगे...)

अब ३८वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव श्लोक कहते हैं :-

(मालिनी)

जयति समयसार: सर्वतत्त्वैकसार:
सकलविलयदूर: प्रास्तदुर्वारमार:।
दुरिततरुकुठार: शुद्धबोधावतार:
सुखजलनिधिपूर: क्लेशवाराशिपार: ।।५४।।

(रोला)

सकलविलय से दूर पूर सुखसागर का जो।
क्लेशोदधि से पार शमित दुर्वारमार जो।।
शुद्धज्ञान अवतार दुरिततरु का कुठार जो।
समयसार जयवंत तत्त्व का एक सार जो।।54।।

सर्व तत्त्वों में जो एक सार है, जो समस्त नष्ट होने योग्य भावों से दूर है, जिसने

दुर्वार काम को नष्ट किया है, जो पापरूपी वृक्ष को छेदनेवाला कुठार है, जो शुद्ध ज्ञान का अवतार है, जो सुखसागर की बाढ़ है और जो क्लेशोदधि का किनारा है, वह समयसार (शुद्ध आत्मा) जयवन्त वर्तता है।

जिस शुद्धात्मा के आश्रय से सुख प्रकट होकर समस्त क्लेश का अन्त आता है, वह शुद्धात्मा कैसा है ? यह कहते हैं।

(१) साततत्त्वों में शुद्धजीवतत्त्व ही एकमात्र सार है, अन्य कोई सार नहीं है। संवर, निर्जरा, मोक्ष साररूप नहीं हैं; क्योंकि वे एक समय की पर्यायें हैं, उनके लक्ष्य से राग की उत्पत्ति होती है; अतः वे सार नहीं हैं। परमपारिणामिकभाववाला जीवतत्त्व ही एकमात्र सार है।

(२) वह शुद्धात्मा समस्त नाशवान भावों से दूर है। औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक तथा क्षायिक - ये सभी नाशवान भाव हैं; उनसे शुद्धात्मा दूर है। औदयिक, औपशमिक और क्षायोपशमिक भाव तो नाश को प्राप्त होते हैं; किन्तु क्षायिकभाव को भी नाशवान कहने का कारण यह है कि केवलज्ञान अथवा सिद्धदशा की पर्यायें भले ही प्रवाहरूप से सादि-अनन्तकाल तक रहें तो भी एक पर्याय का काल तो एक समय ही है। एक समय में एक, दूसरे समय दूसरी - इसप्रकार पर्याय प्रतिसमय पलटती रहती है, इसलिये नाशवान कहा है। परमपारिणामिकभाव एकरूप अनादि-अनन्त रहता है; इसलिये क्षायिकादि चार भावों से शुद्धात्मा को दूर कहा है।

(३) काम अर्थात् परपदार्थ की इच्छा। त्रिकालीशुद्ध आत्मा का आश्रय लेने से पर के झुकाव का भाव नष्ट हो जाता है; अत: ध्रुवस्वभाव के आश्रय से कार्य होता है - ऐसा कहकर शुद्धध्रुवस्वभाव की महिमा बतलाते हैं।

(४) जिसप्रकार कुठार मूल में से वृक्ष को छेदता है, उसीप्रकार शुद्धचैतन्यस्वभाव का आश्रय लेने से मिथ्यात्वादिरूप पाप मूल से विनष्ट हो जाते हैं और पुनः उत्पन्न नहीं होते; जैसे वृक्ष के मात्र पत्ते तोड़े जायें तो वह पुनः पनप सकता है; किन्तु यदि समूल नाश कर दिया जाये तो पुन: नहीं उगता; वैसे ही यहाँ शुद्धचैतन्यस्वभाव का आश्रय करने से संसार का समूल नाश हो जाता है, जिसके कारण शुभ तथा अशुभ भावरूपी पत्ते पुनः उत्पन्न नहीं होते।

(५) शुद्धस्वभाव के आश्रय से नवीन यथार्थज्ञान प्रकट होता है, मानो चैतन्य का पिण्ड आत्मा नया जन्मा हो; ऐसा कहकर शुद्धचैतन्य-त्रिकालीस्वभाव को ही शुद्धज्ञान का अवतार कहा है। **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : परिचय किसका करना चाहिए ?

उत्तर : सत्स्वरूप आत्मा का परिचय करना चाहिए। जितना जिसका परिचय होगा, उतनी ही उसकी परिणति होगी। राग का रसीला होकर जगत के जीवों का परिचय करेगा तो तेरी परिणति पतित हो जायेगी। जिनको शरीरादि का प्रेम है, पुण्य का प्रेम है, ऐसे लौकिकजनों का परिचय करेगा तो तेरी परिणति बिगड़ जायेगी। लोग मान-सन्मान तुझे समर्पित करेंगे तो उनके परिचय में तू मर जायेगा। स्त्री-पुत्रादि अथवा व्यापारादि के परिचय से तुझे विशेष हानि होगी। तू तो आनन्द का नाथ प्रभु है। तेरे परिचय में यदि वह रहेगा तो तुझे आनन्द और सुख प्राप्त होगा। जैसे जंगल में सिंह निर्भय होकर विचरता है, उसे हिरण आदि का भय नहीं होता; वैसे ही तू भी निर्भय होकर अपने स्वदेश में विचरण कर।

प्रश्न : आत्मानुभव होने से पहले अन्तिम विकल्प क्या होता है?

उत्तर : अन्तिम विकल्प का कोई नियम नहीं है। राग से भिन्नता पूर्वक शुद्धात्मा की सन्मुखता का प्रयत्न करते-करते चैतन्य की प्राप्ति होती है। जहाँ त्रिकाली ज्ञायक-प्रभु की तरफ परिणति ढल रही हो, ज्ञायकधारा की उग्रता और तीक्ष्णता हो, वहाँ अन्तिम विकल्प क्या होगा-इसका कोई नियम नहीं है। पर्याय को अन्दर गहराई में ध्रुव पाताल में ले जाय, वहाँ भगवान आत्मा की प्राप्तिरूप सम्यग्दर्शन होता है।

प्रश्न : स्वानुभूति कैसे करना?

उत्तर : राग की वृत्ति पर की तरफ जाती है, उसका लक्ष छोड़कर स्वसन्मुख झुके तो आत्मानुभूति हो।

प्रश्न : विषय-कषाय की सतत् विडम्बना से छूटने का साधन क्या?

उत्तर : विषय-कषाय का प्रेम छोड़ना, रुचि छोड़ना, विषय-कषाय के राग से चैतन्य का भेदज्ञान करना, वह विषय-कषाय की सतत् विडम्बना से छूटने का साधन है।

प्रश्न : इस तत्त्व के संस्कार अगले भव में भी बने रहें- ऐसा कोई उपाय है क्या ?

उत्तर : हाँ, तत्त्व का पक्का निर्णय करे तो अगले भव में वह संस्कार काम आ सकता है।

प्रश्न : विकल्पों से निर्विकल्प दशा की प्राप्ति क्यों नहीं होती ?

उत्तर : विकल्प से निर्विकल्प चैतन्य के अनुभव की तरफ जायेंगे- ऐसा जो मानता है, वह विकल्प को और निर्विकल्प तत्त्व को-दोनों को एक मानता है, अत: उसे विकल्प का ही अनुभव रहेगा; किन्तु विकल्प से छूटकर निर्विकल्प चैतन्य का अनुभव नहीं होगा। जो विकल्प को साधन के रूप में स्वीकार करता है, वह विकल्प का अवलम्बन छोड़कर आगे नहीं बढ सकता अर्थात् विकल्प से पार चैतन्यतत्त्व उसके अनुभव में नहीं आ सकता।

भाई ! चैतन्यतत्त्व और विकल्प-इन दोनों की जाति ही जुदी है। चैतन्य में से विकल्प की उत्पत्ति नहीं होती और विकल्प का प्रवेश चैतन्य में नहीं होता। इसप्रकार दोनों की अत्यन्त भिन्नता को अन्तरंग से विचार कर चैतन्य की ही भावना में तत्पर रहो। चैतन्य में जैसे-जैसे निकटता होती जाती है, वैसे-वैसे विकल्पों का शमन होता जाता है, पश्चात् चैतन्य में लीन होने पर विकल्पों का सर्वथा लोप हो जाता है। इस भाँति चैतन्य में विकल्प नहीं हैं-ऐसे भिन्न चैतन्य का तुम तीव्र लगन से चिंतवन करो।

प्रश्न : अनुभूति में और ज्ञान में क्या अंतर है ?

उत्तर : ज्ञान में तो सम्पूर्ण आत्मा जाना जाता है और अनुभूति में तो पर्याय का ही वेदन होता है, द्रव्य का वेदन नहीं होता।

प्रश्न : आत्मा में अनंत गुण हैं; उस गुणभेद का लक्ष छोड़ने से निर्विकल्पता होती है, तो उन अनंत गुणों का ज्ञान चला नहीं जाता?

उत्तर : आत्मा में अनंत गुण हैं, उनका ज्ञान करके उनके भेद का लक्ष छोड़ने से ज्ञान चला नहीं जाता; भेद का विकल्प छूटकर दृष्टि अभेद होने से निर्विकल्पता में अनंत गुणों का स्वाद आता है- अनुभव होता है।

समयसार की 7वीं गाथा की टीका में कहा है-अनंत पर्यायों को एक द्रव्य पी गया है, वहाँ पर्याय शब्द से सहवर्ती गुण कहे हैं। समयसार की 294 वीं गाथा की टीका में भी सहवर्ती गुणों को पर्याय शब्द से कहा है। अनंत गुणों को द्रव्य पी गया है अर्थात् अनंत गुणमय अभेदरूप एक अखण्ड आत्मा है।

आत्मा शुद्ध चैतन्यमूर्ति अखण्ड अभेद एकरूप है। उसमें यह अशुद्ध पर्यायवाला आत्मा और यह शुद्ध पर्यायवाला आत्मा - इसप्रकार एकरूप आत्मा में दो भेद करना कुबुद्धि है। जो एकरूप ज्ञायकभाव में यह बहिरात्मा और यह अन्तरात्मा- ऐसे भेद करता है, वह पर्यायबुद्धि है। शुद्ध निश्चयनय का विषय त्रिकालशुद्ध एकरूप आत्मा पर्यायरहित है, उसमें पर्याय-भेद करने का विकल्प करता है (दृष्टि करता है), वह मिथ्यादृष्टि है।

समाचार दर्शन -

जबलपुर में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा में दिनाँक 13 व 14 अप्रैल को आचार्य कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन वीतराग-विज्ञान मंडल एवं अ.भा. दि.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह विशाल जनसमुदाय के मध्य गरिमा के साथ भव्यता लिये हुये अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

दिनाँक 14 अप्रैल को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ईश्वरदासजी रोहाणी (अध्यक्ष-मध्यप्रदेश विधानसभा)ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रभासजी साहू (महापौर-नगरनिगम, जबलपुर) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शरदजी जैन (विधायक-उत्तर मध्यक्षेत्र जबलपुर), श्री निर्मलचंदजी भूरा (अध्यक्ष-जैन श्वेताम्बर संघ जबलपुर), श्री भगवतीधरजी वाजपेई (अध्यक्ष-चेम्बर ऑफ कॉमर्स, जबलपुर), श्रीमती सुषमा जैन (सदस्य-महिला आयोग), श्री डी.सी.जैन (चेयरमैन-ज्ञानगंगा ग्रुप), डॉ. जितेन्द्रजी जामदार (वरिष्ठ चिकित्सक एवं समाजसेवी), श्री अजितजी जैन (सहायक महाप्रबंधक-भारतीय स्टेट बैंक आंचलिक कार्यालय) आदि महानुभाव मंचासीन थे।

समारोह में आचार्य कुन्दकुन्द दि.जैन वीतराग-विज्ञान मंडल एवं अ.भा.दि.जैन युवा फैडरेशन के अतिरिक्त नगर व आसपास की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे। सभी ने डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल व अभिनन्दन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान मंडल का परिचय श्री अशोकजी जैन ने एवं युवा फैडरेशन का परिचय श्री मनोजजी जैन ने दिया। डॉ. भारिल्ल का परिचय एवं उनके आध्यात्मिक जगत के योगदान पर पण्डित विरागजी शास्त्री ने प्रकाश डाला। अभिनन्दन-पत्र का वांचन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा किया गया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. भारिल्ल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये कहा कि **सम्पूर्ण जैन समाज में इन जैन लोकप्रिय वक्ता नहीं है। आपने न केवल जैन दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है, बल्कि जैनदर्शन में समाहित नैतिक, शिक्षाप्रद सिद्धान्तों को भी लोगों के हृदय में स्थापित किया है। विदेशों के होटलों में शाकाहारी भोजन प्राप्ति का श्रेय डॉ. भारिल्ल को ही जाता है। उन्होंने अपने आप को डॉ. भारिल्ल का शिष्य बताते हुये अहिंसा व शाकाहार पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार करने का आश्वासन दिया।**

समारोह के पूर्व डॉ. भारिल्ल द्वारा णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन हुआ। कार्यक्रम का मङ्गलाचरण श्री श्रेणिकजी जैन ने तथा संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री एवं डॉ.श्रेयांसजी शास्त्री द्वारा किया गया। अंत में आभार प्रदर्शन श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन ने किया। **- संजय जैन**

बाँसवाड़ा में व्याख्यान एवं हीरक जयंती

बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ गाँधी मूर्ति स्थित पृथ्वी क्लब में दिनाँक 25 अप्रैल को अहिंसा प्रचार-प्रसार समिति के तत्त्वावधान में हिन्दू-मुस्लिम आदि सकल समाज के लिये विशालस्तर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अहिंसा विषय पर व्याख्यान एवं हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया।

राजस्थान में पहली बार इसप्रकार सकल समाज के लिये रखे गये व्याख्यान कार्यक्रम में सकल समाजों से विविध संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित लगभग 900 से 1000 लोगों ने धर्मलाभ लिया। विशेष बात यह है कि डॉ. भारिल्ल के अहिंसा विषय से प्रभावित होकर मुस्लिम समाज के अनेक लोगों ने मंच पर उपस्थित होकर आजीवन हिंसा न करने की प्रतिज्ञा ली तथा अपने स्वयं के बैनरतले डॉ. भारिल्ल का व्याख्यान कराने की बात कही।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अमजद हुसैन (उप सभापति नगरपालिका बांसवाड़ा), श्री महीपालजी ज्ञायक एवं श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

इस अवसर पर प्रचार समिति के सदस्य श्री कांतिलालजी पंचाल, उपजिला प्रमुख श्री शांतिलालजी सेठ, श्री विनोदजी अग्रवाल, श्री नरेन्द्रजी चौरड़िया, श्री मुकेशजी जैन, श्री भालचंदजी दवे, श्री हर्षजी कोठारी, श्री सुमतिलालजी लुणदिया, श्री अभिषेकजी जैन, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री एवं जाहिद अहमद ने डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण करके, शॉल ओढाकर, पगड़ी पहिनाकर एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया।

इस प्रसंग पर बांसवाड़ा एवं आस-पास के क्षेत्रों में रह रहे डॉ. भारिल्ल के शिष्यों में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री, पण्डित रितेशजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री, पण्डित निमेशजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, पण्डित मोहितजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी शास्त्री, पण्डित भरतजी शाह, पण्डित धर्मेशजी शास्त्री आदि ने भी अपने गुरु का माल्यार्पणकर भावभीना सम्मान करते हुये आजीवन तत्त्वप्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में नगर के प्रबुद्ध नागरिक श्री शम्भूलालजी हिरण (अध्यक्ष-चैम्बर ऑफ कॉमर्स), श्री नाथूलालजी हरिजन (पार्षद), पण्डित राकेशजी शास्त्री (व्याख्याता-राज.महाविद्यालय), श्री बसंतचंद्रजी जोशी आदि भी उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि इस प्रसंग पर श्री महीपालजी ज्ञायक परिवार की ओर से आस-पास के गाँवों से पधारे सभी मुमुक्षु साधर्मियों के लिये ध्रुवधाम में भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई थी।

समस्त कार्यक्रम प्रो.आई.वी.त्रिवेदी (डीन, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) व प्रो. एन. के. मेहता के निर्देशन तथा श्रीमती निर्मला चेलावत व सुश्री सरोज नागावत के संयोजन में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं डॉ. ममता जैन ने किया।

दिनांक 24 अप्रैल को ध्रुवधाम-बांसवाड़ा में डॉ. भारिल्ल के समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला।

रतलाम में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक २५ अप्रैल को रात्रि में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। समारोह से पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

इस अवसर पर आयोजित हीरक जयन्ती समारोह की अध्यक्षता श्री हिम्मतजी कोठारी (पूर्व गृहमंत्री, म.प्र.) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयकुमारजी 'जलज' तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर तथा फैडरेशन के राज.प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ नन्ही बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ श्री हुकमचंदजी छाबड़ा, श्री जम्बूकुमारजी पाटोदी, श्री निर्मलजी गोधा, श्री चंद्रप्रकाशजी मोठिया, श्री अरुणजी चपलोत, श्री अजयजी दोशी एवं श्री पंकजजी बिलाला ने डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल आदि भेंटकर सम्मानित किया।

श्री हिम्मतजी कोठारी (पूर्व गृहमंत्री), डॉ. जयकुमारजी जलज, श्री आनंदकुमारजी अजमेरा, श्री प्रमोदजी पाटनी, श्री कान्तिलालजी बड़जात्या, श्री मानमलजी अग्रवाल एवं श्री राजकुमारजी अजमेरा ने डॉ. भारिल्ल को अभिनन्दन-पत्र भेंट कर उनके यशस्वी जीवन की मंगलकामना की। अभिनन्दन-पत्र का वाचन श्री जयन्तजी जैन ने किया।

इसके अतिरिक्त सकल जैन समाज के श्री रंगलालजी चौरड़िया, श्री पूनमचंदजी कोठारी, श्री विनोदकुमारजी मुणत, श्री भंवरलालजी पुंगलिया, श्री मगनलालजी रूनवाल, श्री महेन्द्रकुमारजी बोथरा, श्री आजादजी मेहता, श्री हीरालालजी पाटोदी, डॉ. सुरेन्द्रजी जैन, श्री हरकचंदजी सांवला आदि गणमान्य लोगों ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम के **अध्यक्ष** पूर्व गृहमंत्री कोठारीजी ने अपने भाषण में कहा कि **मैं डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व और कर्तृत्व से बहुत प्रभावित हूँ, इनकी आकर्षक, तार्किक व सरल प्रवचन शैली जैनधर्म के सिद्धांतों को समझने में अत्यधिक सहायक होती है।**

संचालन श्री राजकुमारजी अजमेरा तथा आभार प्रदर्शन श्री कीर्ति बड़जात्या ने किया।

गुरुदेवश्री की जन्म जयंती

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयन्ती के अवसर पर दिनांक 9 मई को प्रात: एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई मंचासीन थे।

गोष्ठी में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. श्रेयांसजी सिंघई, पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ, डॉ. नीतेशजी शास्त्री जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह एवं श्री निहालचन्दजी जैन ने गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान की महिमा बताते हुये उनसे संबंधित अनेक संस्मरण सुनाये तथा उनके उपकार का स्मरण किया। सभा का संचालन पण्डित भागचंदजी जैन ने किया।

वाशिम एवं शिरपुर में हीरक जयंती

१. वाशिम (महा.) : यहाँ महावीर भवन में दिनाँक १० अप्रैल को सकल दि.जैन समाज एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीषेण डोणगाँवकर (रिटायर्ड हाइकोर्ट जज) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री माणिकचंदजी बज मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री राजेन्द्रजी बड़जात्या ने डॉ. भारिल्ल द्वारा जीवन पर्यंत किये गये तत्त्वप्रचार-प्रसार का उल्लेख करते हुये सभा में उनका परिचय दिया।

तत्पश्चात् वाशिम की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, विभिन्न मंदिरों के अध्यक्षों एवं आसपास के गाँवों से आये हुये ७५ प्रतिनिधियों ने डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं श्रीफल भेंटकर भावभीना अभिनन्दन किया।

इस प्रसंग पर जैन चेरिटेबल ट्रस्ट की महिलाओं द्वारा विशेषरूप से तैयार किया गया प्रशस्ति-पत्र डॉ.भारिल्ल को भेंट किया गया। समारोह में अध्यक्ष महोदय सहित अनेक लोगों ने डॉ. भारिल्ल के योगदान की दिल खोलकर प्रशंसा की।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ.भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री रविजी बज एवं आभार प्रदर्शन श्री चंद्रशेखरजी उकलकर ने किया।

२. शिरपुर (महा.) : यहाँ दिनाँक ९ अप्रैल को श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दि.जैन संस्थान द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सम्मान किया गया। इस अवसर पर मालेगाँव, रिसोड एवं आसपास के ७ गाँवों के प्रतिनिधियों ने शॉल एवं माल्यार्पण से डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम में श्री माणिकचंदजी बज, श्री राजकुमारजी चवरे, श्री चंद्रशेखरजी उकलकर, श्री श्रीपालजी बिलाला एवं श्री मन्नाटकरजी विशेषरूप से उपस्थित थे।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में अनेक वर्षों से यहाँ चल रहे दिगम्बर-श्वेताम्बर विवाद का शीघ्र समाधान होने की भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनंतजी विश्वम्भर ने किया। **– संतोष पाटनी**

अकोला में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

अकोला (महा.) : यहाँ संघवीवाड़ी में दिनाँक 11 अप्रैल को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया।

रात्रि 8 बजे आयोजित इस कार्यक्रम में श्री माणिकचंदजी झांझरी, श्री नवलचंदजी कोटेचा एवं श्री ललितभाई वोरा ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पणकर अभिनन्दन किया। इसके पश्चात् अकोला की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

इस अवसर पर शांतादेवी बिलाला, नीलम पाटनी, वन्दना अजमेरा एवं ज्योति प्रमोद झांझरी ने श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल को शॉल व श्रीफल प्रदानकर सम्मानित किया।

सम्मान समारोह के पूर्व उपस्थित विशाल जनसमुदाय के बीच डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर अत्यंत मार्मिक व्याख्यान हुआ।

मङ्गलाचरण श्री अक्षयजी बाकलीवाल ने तथा संयोजन श्री सुभाषजी अजमेरा ने किया।

कारंजा में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

कारंजा (महा.) : यहाँ शेनगण दि. जैन मंदिर में दिनाँक 4 अप्रैल को तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर दि.जैन शेनगण मंदिर की ओर से श्री देवासावजी चवरे, बालात्कार दि.जैन मंदिर की ओर से श्री मनोहरजी डाखारे, काष्टासंघज दि. जैन मंदिरकी ओर से श्री अविनाशजी दयीपूरकर, श्री महावीर ब्र. आश्रम की ओर से श्री भरतभाऊ भोरे, गुरुकुल सेवा मंडल की ओर से श्री जयंतकुमारजी भिसीकर, श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति की ओर से श्री उद्धर अशोकजी चवरे, जैन महिला मण्डल की ओर से सौ. शुभांगी दोंडगाँवकर आदि महानुभावों ने शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पण से डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया। संचालन श्री अमल राजकुमारजी चवरे ने किया।

खामगाँव में हीरक जयन्ती

खामगाँव (महा.) : यहाँ दिनाँक 9 अप्रैल को महावीर भवन में ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर सकल जैन समाज एवं मलकापुर दि. जैनधर्म व समाज विकास ट्रस्ट की ओर से अध्यक्ष श्री नितिनजी वैद्य, कार्याध्यक्ष श्री राजकुमारजी चवरे, सचिव श्री प्रवीणजी जैन एवं समस्त ट्रस्ट मण्डल ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल, चंदन की माला एवं अभिनन्दन-पत्र देकर सम्मान किया।

कार्यक्रम में मलकापुर समाज ट्रस्ट, श्री वीतराग कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु मण्डल एवं पंचपरमेष्ठी भक्त मंडल की ओर से श्री वी. डी. पोरवाड ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। इनके अतिरिक्त दि. जैन समाज, तारणतरण समाज, श्वेताम्बर समाज, स्थानकवासी समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी विशेषरूप से उपस्थित होकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

मलकापुर से आये 40-50 लोगों के अतिरिक्त वाशिम, नांदुरा, मोलसा आदि स्थानों से भी साधर्मियों ने पधारकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया एवं उनकी दीर्घायु की कामना की।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर मार्मिक व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम की सफलता में श्री राजेन्द्रजी बड़जात्या, श्री विमलजी कासलीवाल, श्री भीकमचंदजी जैन, श्री वीरेन्द्रजी जैन, अध्यक्ष श्री अजयजी गोधा आदि अनेक लोगों का सराहनीय सहयोग रहा।

नवीनीकरण शिलान्यास

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित बाबूभाई मेहता स्मृति सभागृह के नवीनीकरण का कार्य श्री चन्द्रकान्त भाई मेहता जयपुर की ओर से कराया जा रहा है।

इसका विधिवत् शुभारंभ वैशाख कृष्ण एकादशी रविवार, 9 मई को किया गया। इस प्रसंग पर श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, श्री निहालचन्दजी-पीतल फैक्ट्री, श्री अजितजी तोतूका, श्री शांतिलालजी जैन, श्री मूलचन्दजी छाबड़ा, श्री अजितजी बंसल, आर्किटेक्ट एम. के. जैन के अतिरिक्त फैडरेशन एवं महिला मण्डल के सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने एवं शिलान्यास विधि के कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। ज्ञातव्य है कि शिलान्यास के पूर्व अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा त्रिमूर्ति जिनमंदिर पर पूजन का आयोजन किया गया।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय का गौरव

अलीगढ (उ.प्र.) : मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को अत्यल्प काल में शीघ्र उन्नति की दृष्टि से देश का सर्वश्रेष्ठ उन्नतिशील विश्वविद्यालय घोषित किया गया है। समग्र दृष्टि से देशभर के लगभग ४५० विश्वविद्यालयों में मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को १८वाँ स्थान प्राप्त हुआ है।

देशभर के सरकारी व गैरसरकारी विश्वविद्यालयों का यह सर्वेक्षण 'जी न्यूज' चैनल और सुप्रतिष्ठित समाचार पत्र 'डीएनए' ने अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डाटा अनेलेसिस कम्पनी 'इप्सोस' के माध्यम से कराया है। इस व्यापक सर्वेक्षण में प्राध्यापकों की योग्यता और शिक्षक एवं छात्रों के बीच अनुपात की दृष्टि से मङ्गलायतन विश्वविद्यालय को १४वाँ एवं शैक्षणिक वातावरण के मामले में १९वाँ स्थान प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालयों के इतिहास और उसकी प्रतिष्ठा के अवलोकन में भी मङ्गलायतन विश्वविद्यालय २० वें तथा प्रवेश प्रक्रिया की दृष्टि से १७ वें स्थान पर रहा।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के चेयरमेन श्री पवनजी जैन ने इस उपलब्धि के लिये शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। यह उपलब्धि जैन समाज के लिये गौरव की बात है।

औरंगाबाद में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ गणेश मंगल कार्यालय सिडको में दिनाँक ९ मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मधुरकुमारजी कटके (रिटा. पुलिस उप अधीक्षक) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रवीन्द्रजी पाण्डे, श्री गौतमचन्दजी संचेती, श्री पन्नालालजी गंगवाल, श्रीधररावजी जैन एवं गाडेकर परिवार मंचासीन थे।

मंगलाचरण श्री संजयजी राउत ने एवं डॉ. भारिल्ल का परिचय डॉ. सौ.प्रतिभा पाण्डे ने दिया।

इस अवसर पर पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम एलोरा, श्री समन्तभद्र विद्यामंदिर एलोरा, भारतीय जैन संघटना औरंगाबाद, स्वानुभव स्वाध्याय मंडल औरंगाबाद आदि लगभग २० संस्थाओं ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। इसके पश्चात् लगभग ५० लोगों ने भी व्यक्तिगतरूप से डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया। अन्त में आभार प्रदर्शन श्री नेमीचंदजी अर्पल ने किया।

कार्यक्रम के पूर्व लगभग ६०० लोगों की उपस्थिति में डॉ. भारिल्ल का **महावीर की दृष्टि में अहिंसा** एवं **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

सेलू में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती

सेलू (महा.) : यहाँ दिनाँक 10 मई, 2010 को सकल जैन समाज की ओर से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री माणकचंदजी विनायक ने की। डॉ. भारिल्ल का परिचय श्री अशोकजी वानरे ने दिया।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने सेलू की संपूर्ण समाज की ओर से डॉ. भारिल्ल को श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंटकर भावभीना अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ. भारिल्ल का **भगवान महावीर की अहिंसा** एवं **णमोकार महामंत्र** विषय पर बहुत सरल भाषा में प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम का संचालन श्री सुभाषजी काला ने एवं मंगलाचरण श्री शिरीषजी सिंघई ने किया।

आर्ट ऑफ हैप्पी लीविंग सेमिनार

मुम्बई : दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा आयोजित **आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग : तृतीय सेमिनार** दिनाँक 18 अप्रैल को नानावटी अस्पताल के सभागृह में सम्पन्न हुआ।

श्रीमती स्वानुभूति जैन के कुशल संचालन में संपन्न इस आध्यात्मिक सेमिनार का प्रारंभ श्रीमती ज्योति गाला के मङ्गलाचरण से हुआ। श्री अविनाशकुमारजी टडैया ने ट्रस्ट की गतिविधियों पर प्रकाश डाला ।

श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टडैया ने **तनाव** को भूत-वर्तमान एवं भविष्य काल के आधार पर बहुत सरल शैली में समझाया।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कर्तृत्त्व की आकुलता को दु:ख का कारण बताते हुये कर्त्ताभाव का अभाव करके सुखी होने की बात कही।

श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि पूर्ण स्वीकार्यता (Total Acceptable)अर्थात् जो जिस रूप में है, उसे वैसे ही बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार करके हम सुख शांति की प्राप्ति कर सकते हैं। समस्या या दु:ख का कारण हमारे स्वयं में है, लोगों में नहीं; अत: दृष्टिकोण बदलकर, क्रमबद्धपर्याय को स्वीकार करके ही व्यर्थ के तनाव को दूर कर सकते हैं।

श्रीमती स्वानुभूति जैन ने पुण्य-पाप के उदय का विचार कर एकमात्र वीतराग भाव धारण करके ही सच्चा सुख प्राप्त करने की बात कही।

सभा में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विपिनजी दोशी उपस्थित थे।

तृतीय शिक्षण शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ एवरशाइन नगर, मलाड में दिनाँक 14 से 18 अप्रैल, 2010 तक विशाल स्तर पर तृतीय बाल युवा धार्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर, पण्डित अश्विनभाई मलाड एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में प्रतिदिन दोनों समय पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयचक्र की कक्षा अत्यंत सरल, सुबोध एवं रोचक शैली में ली गई, जिससे अनेक जिज्ञासुओं को नयों संबंधी शंकाओं का समाधान मिला। पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री ने छहढाला एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री ने आत्मा-परमात्मा विषय पर कक्षा ली। पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल ने इन्द्रियाँ, प्रातिहार्य एवं कषाय विषय पर कक्षा ली। पण्डित राहुलजी शास्त्री ने जैनधर्म के मूल सिद्धांत सिखाये।

इस शिविर में बोरीवली, कांदीवली, जोगेश्वरी, मलाड, गोरेगांव व अन्य स्थानों से लगभग 500 साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

शिविर के मध्य धार्मिक चित्रकला प्रतियोगिता एवं जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

सम्पूर्ण शिविर श्रीमती पूजा भारिल्ल के निर्देशन एवं संचालन में कु.वंदना जैन, कु. सपना जैन एवं कु. अणिमा जैन के सहयोग से सम्पन्न हुआ। **– आर. के. जैन, मलाड**

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेमिनार संपन्न

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनाँक १७ व १८ अप्रैल को दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। सेमिनार का विषय **जीवनोपयोगी शुद्ध संस्कार विधि का स्वरूप** था।

इस सेमिनार में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित रतनलालजी बैनाड़ा आगरा, श्री प्रकाशदादा ज्योतिर्विद मैनपुरी, डॉ.एस.पी.शर्मा (संस्कृत विभागाध्यक्ष-अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय), श्री नरेन्द्रप्रकाशजी फिरोजाबाद, प्रो.अशोककुमारजी जैन रुड़की, ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ.राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री अलीगढ, प्रो.सुदीपजी जैन दिल्ली, डॉ.वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ.अनेकांतजी जैन दिल्ली, डॉ.योगेशजी जैन अलीगंज, श्री संजयकुमारजी जैन दौसा, डॉ.सतीशकुमारजी जैन अलीगढ, श्री जगदीशजी पंवार अलीगढ, डॉ.शुद्धात्मप्रकाशजी जैन अलीगढ, डॉ.ममताजी जैन बांसवाड़ा, सौ.स्वर्णलताजी जैन अलीगढ आदि अनेक विद्वानों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एस.सी.जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी मंगलप्रज्ञाजी थीं तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में तीर्थङ्कर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के चैयरमैन श्री सुरेशचंदजी जैन मंचासीन थे।

इस सेमिनार में अहिंसक एवं अल्पारंभी संस्कार विधि का स्वरूप, पूजन आदि विधियों का स्वरूप, प्रतिष्ठा विधि का स्वरूप, वास्तु आदि विधियों के स्वरूप पर विस्तृत व गहन चर्चा हुई; इसमें लौकिक व धार्मिक दोनों प्रकार के संस्कारों को चर्चा का विषय बनाया गया।

इस कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में संस्कारों में आ रही अशुद्धता पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि पंचकल्याणकों के अन्तर्गत बारातों का आयोजन और उनमें स्त्रियों एवं पुरुषों का नृत्य करना न सिर्फ असंगत है; बल्कि अशोभनीय भी है। संस्कारों को शुद्ध बनाने के लिये उन्होंने विचारों में आध्यात्मिकता के समावेश पर बल दिया।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो.एस.पी.शर्मा ने संस्कारों के विषय में कहा कि संस्कार आत्मा के लिये नहीं; बल्कि सामाजिक जीवन के लिये है। संस्कारों का उपयोग धार्मिक अलगाव के लिये नहीं; अपितु धार्मिक सहअस्तित्व और सामंजस्य के लिये किया जाना चाहिये। मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीशचंदजी जैन ने कहा कि संस्कार जीवन को अनुशासित करने का एक माध्यम है। विश्वविद्यालय के चैयरमैन श्री पवनजी जैन ने विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ उन्नतिशील विश्वविद्यालय घोषित किये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये इसका पूरा श्रेय विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, शिक्षकों एवं छात्रों को दिया।

सभा का संचालन डॉ.राकेशकुमारजी शास्त्री तथा मंगलाचरण श्री संयमजी जैन ने किया।

दिनाँक १८ अप्रैल को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता महान शिक्षाविद् प्रो.के.पी.पाण्डेय, वाराणसी द्वारा की गई।

हिंगोली में डॉ. भारिल्ल को 'जिनधर्म गौरव'

हिंगोली (महा.) : यहाँ श्री महावीर भवन में दिनाँक १० व ११ अप्रैल को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन तथा समस्त हिंगोली समाज द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह एवं दो दिवसीय प्रवचन शृंखला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित जयकुमारजी दोंडल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दीपकजी कंदी (कार्यकारी संचालक, गो.म.पाटबंधारे विकास महामंडल), श्री कमलचंदजी परतवार (न्यायाधीश, डेब्ट्स रिकवरी ट्रिब्यूनल मुम्बई), श्री राजेन्द्रजी पाटणी (भूतपूर्व विधायक कारंजा), श्री मिलिंदजी यंबल (उपाध्यक्ष जि.प.हिंगोली) एवं डॉ.अरुणजी दोडल मुम्बई उपस्थित थे।

अतिथिगणों के उद्बोधन के पश्चात् ८०० से १००० लोगों की उपस्थिति में समस्त हिंगोली जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल को **जिनधर्म गौरव** की उपाधि से अलंकृत किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष पण्डित पद्माकरजी दोडल परिवार ने डॉ.भारिल्ल का शॉल ओढाकर व श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। तत्पश्चात् हिंगोली के समस्त दिगम्बर जैनमंदिर कमेटियों के ट्रस्टियों, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के युवा साथियों, रत्न समिति, श्वेताम्बर जैन मंदिर एवं स्थानकवासी संघ ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

सम्मान समारोह में शिरडशहापुर, सेनगाँव, नांदेड, परभणी, वसमत, पुसद, फालेगाँव इत्यादि अनेक नगरों से आये समस्त स्वाध्याय प्रेमियों ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया। अन्त में मराठवाड़ा एवं विदर्भ प्रांत से पधारे टोडरमल महाविद्यालय के स्नातकों ने अपने गुरु का एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का अभिनन्दन किया, जिसके अन्तर्गत सभी विद्यार्थियों ने अपने गुरु को चांदी का रथ धर्मरथ के प्रतीक के रूप में भेंट किया।

दो दिवसीय आयोजन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के णमोकार महामंत्र एवं भगवान महावीर की अहिंसा विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

वर्ष २००९ में कोलारस में आयोजित युवा फैडरेशन के महाअधिवेशन में हिंगोली शाखा को सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। वह प्रशस्ति जिनधर्म प्रभावक डॉ. भारिल्ल के करकमलों से फैडरेशन के समस्त सदस्यों को प्रदान की गई।

हार्दिक आमंत्रण...

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा दिलशाद गार्डन दिल्ली द्वारा श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दिनांक 12 से 20 जून, 2010 तक समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न होने जा रहा है। सभी साधर्मी बन्धुओं को भावभीना आमंत्रण है।

कार्यक्रम में सम्मिलित होने एवं उसकी विस्तृत जानकारी हेतु श्री नीरज जैन, महामंत्री 09311158655 से सम्पर्क किया जा सकता है।

कार्यक्रम स्थल – मुखर्जी सी.सै.स्कूल, पी एंड एन पॉकेट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95